vafre izfrosnu

fo"k;

Þ NÙkhlx<+ ds yksd ukV~; % nqxZ ftyk ds fo'ks"k lanHkZ esaß

;w-th-lh- y?kq 'kks/k&ifj;kstuk

lanHkZ Øekad **F.No. MH-13/202002/XII/15-16/CRO-GEN/4081**

¼milagkj½

fo'ofo|ky; vuqnku vk;ksx] e/; {ks=h; dk;kZy;] Hkksiky

dks

izsf"kr

Mkw- ¼Jherh½ izfrek feJk
eq[; vuqla/kkudrkZ
lgk;d izk/;kid ¼fgUnh½
fHkykbZ efgyk egkfo|ky;]
fHkykbZ] nqxZ ¼N-x-½

mi lgkj

छत्तीसगढ़ भारतीय गणतंत्र का 26वां राज्य है जिसका गठन 01 नवम्बर 2000 को हुआ है। यह भारत के उन नये छोटे राज्यों की श्रृंखला का एक हिस्सा है जो भारतीय लोकतंत्र में विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। इस ग्रंथ में छत्तीसगढ के भूगोल पुरातत्व, इतिहास से लेकर धर्म, दर्शन और कलाओं का एक समावेशी चित्र प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। छत्तीसगढ की समासिक संस्कृति में विविधवर्णी लोककला परम्पराओं का व्यापक अवदान है प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में फैले लोकमंचीय कलारूपों की अनेकानेक मंडलियाँ इस अवदान की जीवंत साक्षी है। छत्तीसगढ के भौगोलिक ऐतिहासिक एवं अन्य परिचय से छत्तीसगढी संस्कृति के महिमामय गरिमामय एवं समृद्ध लोक परंपरा का स्वरूप परिदृश्य होता है। छत्तीसगढ की सांस्कृतिक परंपरायें आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है लोकनाट्य एक ऐसा कलारूप है जिन्हें अन्य सभी कलारूपों का कहीं न कहीं आश्रय लेना पड़ता है वह है नृत्य नाटक और संगीत की त्रिवेणी। इसके लोक साहित्य में एक प्रकार की मस्ती और उत्साह भी देखा जाता है लोकगीत, लोकनृत्य के अलावा लोक नाट्य में वह उत्साह सामूहिक रूप में व्यक्त होता है।

लोकनाट्य का अभ्युदय वस्तुतः जनसाधारण के लिए और उन्ही के द्वारा ही हुआ है। लोकनाट्य में काम करने वाले कलाकार नीलकंठ की तरह होते हैं गरीबी अपदान अपेक्षा का जहर पीकर भी हास्य का अमृत बाँटते हैं।

छत्तीसगढ़ की लोक कला विशेषकर लोकनाट्य के क्षेत्र में उसका संरक्षण, संवर्धन, समृद्धि तथा विश्व पटल पर अप्रतिम स्थान एवं लोकप्रिय बनाने में दर्ग जिला के महान पुरोधाओं का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जा सकता है। नाचा गम्मत के क्षेत्र में दुर्ग जिला के जिन लोगों ने अभूतपूर्व समर्पित कार्य किया है उसमें प्रमुख हैं दाउ मंदराजी, महासिंग चन्द्राकर, रामचन्द्र देशमुख, नाट्य निर्देशक रामहृदय तिवारी, मदन निषाद, दीपक चन्द्राकर एवं अनेक छोटे बड़े कलाकार विशेष रूप से दुर्ग जिला का ही मूल निवासी हैं। यही कारण है कि इनके कायों से उत्प्रेरित होकर मैने अपना शोध लेखन कार्य आरंभ किया। जिससे ऐसी बहुमूल्य एवं

पारंपरिक कला का प्रचार प्रसार न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर हो सके तथा शोधार्थियों को भी इससे संबंधित सामग्री मिल सके।

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में सीता बोंगरा और जोंगामार की गुफाओं में नाट्यशालाएुं यहाँ की प्राचीन परंपरा को अभिव्यक्त करती है। इनकी तुलना ग्रीक थियेटरों से की जाती है। प्रश्न यह उठता है कि छत्तीसगढ़ का लोकनाट्य किसे माना जाय उसमें कौन से तत्व हैं जो नाटक से अलग करते हैं – दरअसल नाटक प्रकृति स्थिति से भिन्न कलात्मक होता है तथा विशिष्ट उद्देश्य का आग्रही होता है जबकि लोकनाट्य प्रकृतिजन की अभिव्यक्ति को लोकरंजन के लिए अकृत्रिम रूप में प्रस्तुत करता है। लोकनाट्य लोकधर्म स्वभाव के कारण सर्वसुलभ है। इसके दो अंग है– पहला बहिरंग जिसमें कथा अंचल विशेष की बोली, प्रतीकात्मक पात्र, सहज श्रृंगार और आडंबरहीन रंगमंच आता है। दूसरा अंतरंग जिसमें गीत संगीत नृत्य और अभिनय आता है इनकी समवेत रंग प्रस्तुति ही मूलतः लोकनाट्य है। अभिनवगुप्त ने 'प्राणभूंत तावद ध्रुवागान प्रयोगस्य' कहकर इनकी अनिवार्यता घोषित की है। वास्तव में गीत लोकनाट्य के प्राण हैं इसमें वाद्ययंत्र का प्रयोग होता है। बाद में उसमें अभिनय का समावेश हुआ तो इसे नृत्य कहा गया, अभिनय समर्थता के कारण नृत्य की लोकनाट्य के रूप में विकसित हुआ। छत्तीसगढ़ लोकनाट्य अलिखित और परम्परागत है। इसलिए इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहते हैं । यहाँ तक कि उसमं तत्कालीन घटनाएँ भी माखन–मिश्री जैसी घुम–मिल जाती है। यही तत्व इसे समसामयिक मूल्यों से जोड़कर अधिक आल्हादकारी और उपयोगी बनाता है।

छत्तीसगढ़ का लोकनाट्य रहस वास्तव में छत्तीसगढ़ी रासलीला है। रहस एक ओर जहाँ आनुष्ठानिक है, वहीं कृष्ण के चरित्र से संबंधित लोक नाट्य भी है। रहस का तात्पर्य है संगीत नृत्य प्रधान कृष्ण का विविध लीलाभिनय। रहस में कंस और कृष्ण के जन्म ससे लेकर कंस वध तक विभिन्न लीलाएं खुले मंच पर मंचित की जाती हैं रहस में पुतरियों का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः पूरा गांव ही कृष्ण लीला की रंगस्थली बन जाता है। बेड़ा के बीच में थुन्ह (खम्ब) के आसपास और

गांव की गलियों में कृष्ण लीला की विभिन्न मूर्तियां बनायी जाती है। गांवो में रहस का आयोजन सात से नौ दिन तक होता है।

भतरा नाट्य बस्तर क्षेत्र का एक प्रसिद्ध लोकनाट्य है किन्तु उसका अस्तित्व भी खतरे में है। भतरा नाट्य उड़िसा से आया है इसलिए उसे उड़िया नाट भी कहते हैं इसमें एक गुरू होता है और उसके समक्षी नाट का प्रथम प्रदर्शन किया जाता है इसमें सभी पुरूष रंगकर्मी कार्य करते हैं इनकी वस्त्र बड़ कीमती है यह रेशम, मखमल आदि क बने होते हैं और इन पर माजियों एवं रेशम आदि से काम किया जात है। खुले मैंदान में चारो ओर खुलामंत्र तैयार किया जाता है तथा विशेष रूप से मुखौटों का प्रयोग होता है अधिक खर्चिला होने के कारण अब वहाँ के निवासी इस नाट्य कला से भी दूर हो रहे हैं।

लोक नाट्य की परंपरा में छत्तीसगढ़ में प्रचलित 'नाचा' एक ख्याति प्राप्त लोकनाट्य विधा है, जिसकी प्रस्तुति नौटंकी, भवाई, स्वांग, तमाशा आदि से किसी भी मायने में कम आकर्षक एवं मनोरंजक नहीं होती। लोकगीत एवं लोकनृत्य की समृद्ध परम्परा छत्तीसगढ़ में रही है जिसके सहारे ही लोक नाट्य के रूप में 'नाचा' का विकास हुआ। रायगढ़ से लेकर डोंगरगढ़ और कवर्धा से लेकर बस्तर तक की विस्तृत धरती में यहाँ के ग्राम्यजनों एवं आदिवासियों में अभिन्य कला का निरन्तर विकास होता रहा है, जो 'नाचा' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

लोक में अपने मनोरंजन की मौलिक परंपराएं हैं। हर अंचल में अपने–अपने ढंग की लोकरंग–शैलियों का पारम्परिक विकास हुआ है। जिन्हें हम लोकनाट्य कहते हैं। लोकाचंलों में लोकनाटकों के अपने स्थानीय नाम और पहचान है, जैसे नाचा, माच, स्वांग, गम्मत, करियाला, ख्याल, सांग, विदेसिया, जात्रा, तमासा, हेडिगको, भगत, नौटंकी, भवाई, यक्षगान, रासलीला, रामलीला आदि। लोकनाट्य की देश भर में लंबी और समृद्ध परंपरा दिखाई देती है। आदिम समूहों में भी मनोरंजन की आदिम परिपाटियां मौजूद हैं वन्य जीवन की आद्य अभिव्यक्तियां उनके नृत्य नाटकों में सहजता से दिखी जा सकती है। मिट्टी या काष्ट मुखौटे लगाकर नृत्य और नाट्य प्रस्तुत करने की परंपरा जनजातीय समूहों म्रें प्रायः मिलती है। इनमें बस्तर में माड़ियाओं का माओपाटा, रायगढ़ के कोरकुओ का खम्ब–स्वांग प्रमुख है।

लोक साहित्य मे लोकनाट्य के पाठों, गीतों और संवादों की महती भूमिका है। लोकनाट्य अपने आप में एक समग्र लोकविद्या है, जिसमें लोकसाहित्य की सभी विधाओं का समावेश होता है। पारम्परिक संगी, नृत्य, अभिनय और कथानक से मिलकर लोकनाट्य की सर्जना होती है। लोकनाट्य लोकजीवन की सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब है। लोकनाट्य सामाजिक अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन है।

स्वांग गम्मत का छत्तीसगढ़ी नाम नाचा है। नाचा में मंच गांव की चौपाल या चौराहा होता है, जहाँ गांव के दर्शक सहजता से इक्ट्ठा होते हैं। नाचा के विदूषक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। नाचा शुद्ध मनोरंजन के साथ–साथ समाज के दुाती नस को भी टटोलता है अभिनय और लोकसंगीत की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी नाचा ने भारतीय लोकनाट्यों में सर्वोपरि स्थान बना लिया है।

कुछ लोग रहस में प्रदर्शित होने वाले प्रहसन को गम्मत कहते हैं, जबकि सामान्यतया गम्मत का आयोजन अलग से किया जाता है। गम्मत का मंच भी वर्गाकार बनता है। एक किनारे वादक बैठकर साज बजाते हैं और नर्तक नृत्य करते हैं। गम्मत में सामान्यतः कृष्ण की लीला का ही आख्यान होता है तथा बीच बीच में प्रहसन का प्रदर्शन किया जाता है। गम्मत एक से अनेक दिनों तक आयोजित हो सकता है पर यह अनुष्ठान नहीं है।

'नाचा' में सामान्यतः गम्मत प्रस्तुत किये जाते है। गम्मत के पूर्व परियों द्वारा आकर्षक नृत्य प्रदर्शन होता है। इसके बाद दो जोक्कडों का मंच पर प्रवेश होता है, परी (नारी वेश धारी पुरूष) का आगमन, जोक्कड़ों द्वारा टीका–टिप्पणी, हँसी–मजाक तथा उसके बाद कथानक की शुरूआत होती है। प्रत्येक गम्मत जहाँ एक ओर हास्य–व्यंग्य से परिपूर्ण होता है तो दूसरी ओर दर्शक के मन पर तीखा प्रहार भी होता है।

अपने दुख दारिद्रय, हास्य परिहास, उल्लास, आस्था और विश्वास को छत्तीसगढ़ी मन कलाओं को समर्पित कर उल्ललसित होता है। लोकनाट्य में हमें अनौपचारिकता नजर आती है। छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य में हास्य–विनोद संगीत, नृत्य, मुक्त रंगमंच दर्शकों का साथ समाष्यि, अभिनय में अनौपचारिकता, बोलचाल की सजीव संवाद शैली, संहिता की अपेक्षा अभिनय की प्रधानता, मुखौटा का प्रयोग

और अभिनेता एवं दर्शकों में पारस्परिक सहयोग जैसे कुछ नाट्य विशेषताओं ने लोकरंगमंच को सशक्त बनाया है।

नाचा की कथा पौराणिक हो या ऐतिहासिक लेकिन वह तात्कालिक समस्याओं और अनुभूतियों का स्पर्श करती है। यह टोटल थियेटर यानी पूर्ण नाटक शैली है। इसमें पर्दा पद्धति का आभाव रहता है एक कलाकार कई भूमिका का निर्वहन भी करता है। उस रंगमंच में नाटक दृश्यों, नृत्यों, आदि से अंत तक तांता लगा रहता है। इसमें निर्दिष्ट निर्देशक का अभाव रहता है और आधुनिकता रंगमंच के उस धारणा को चुनौती देता है जिसके अनुसार नाटक वस्तुतः निर्देशक की कृति होती है। परस्पर सुझावों पर आधारित पूर्वाभ्यास इसकी एक विशेषता है वे इक्ट्ठे होते थे उन्हें आपस में मालुम होता था कि कौन चिकारा, कौन हारमोनियम और कौन तबला बजाने में निर्पुण है। हारमोनियम मास्टर मनिजर की भूमिका निर्वहन करता है यह एक प्रकार से नाचा पार्टी का संचालक होता है। नाचा में परी और जोकर नायक नायिक के रूप में अपनी अह्म भूूमिका प्रस्तुत करते हैं कलाकारों में अद्भुत प्रतिभा होती है ये अभिनय करते करते संवाद सर्जन कर लेते हैं उनका आत्मविश्वास देखते ही बनता है किसी भी पात्र का अभिनय सहज ढंग से कर लेते हैं।

छत्तीसगढ़ी बोली में यह नाट्य किया जाता है। इस नाट्य में सामाजिक कुरीतियों, समाज में व्याप्त विषमताओं, राजनैतिक विद्रूपताओं, ढ़ोंग और आडम्बरों पर तीखी चोट की जाती है। प्रहसन और व्यंग्य नाचा का मुख्य स्वरूप है। ये कलाकार अपने चेहरे और हाथों का अधिक प्रयोग करते हैं। नाचा विवाह, गणेशोत्सव, ज्वार, मड़ई उत्सव और खुशी के किसी भी अवसर पर किया जा सकता है। इस नाट्य में किसी विशेष प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं होती। मंच साधारण सा होता है पोशाक भी वही सामान्य सी होती है। चेहरे की सजावट खड़िया, गेरू अथवा हरताल जैसे वस्तुओं से ही की जाती है। जीवन के किसी भी मार्मिक प्रसंग को गीतों और संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें ग्रामीण वाद्यो के अलावा मोहरी, डफरा, डमरू, निसान एवं मंजीरे का प्रयोग किया जाता हैं।

गम्मत छत्तीसगढ़ लोकनाट्य की आत्मा है। लोककथा और बोधकथा का यह अद्भुत संगम है। नीति और विचार के गौरव से महिमा मंछित रही है। यह छत्तीसगढ़ की सर्वप्रिय और एसी उल्लेखनीय प्रदर्शनकारी प्रस्तुति है कि जिसके समक्ष नागर मंच भी नतमस्तक हैं।

नाचा "लोकमंच की आत्मा के औत्सुक्य तृप्त करने का पारंपरिक लोकनाट्य है, लोकभाषा और लोक गीत गुंफित प्रहसन और नृत्य का सम्मिश्रित समन्वित प्रकटीकरण है। लोक की भावनाओं को लोक तक पारंपरिक शैली में युगानुरू यत्तिकिंचत परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करने की विशिष्ट शिल्पविधि लोक के ही मध्य के ये अनुभवी मंचीय कलाकार अपने ज्ञान अनुभव को कथा गति प्रहसन आदि में गूँथकर मनोरंजन और लोकजीवन दर्शन के रूप में सांस्कृतिक प्रवाह को अक्षुण्य रखते हैं।

इस प्रकार भारतीय लोकनाट्य बहुत समृद्ध तथा विस्तृत है। जिनमें छत्तीसगढ़ी नाचा का अपना विशिष्ट स्थान है। आज टी.वी. का दुष्प्रभाव उस पर पड़ रहा है। किन्तु फिर भी उच्च शिक्षित लोगों द्वारा इस ओर सक्रिय होना छत्तीसगढ़ी नाचा एवं लोक संस्कृति के उज्जवल भविष्य का परिचायक है।

छत्तीसगढ़ लोक सांस्कृतिक जगत की दो कालजयी मंचीय प्रस्तुतियॉ हैं– 'चंदैनीगोंदा' और 'सोनहाबिहान'। इन्हें लोकमंचों के महारथियों– क्रमशः दाऊ रामचंन्द्र देशमुख व दाऊ महासिंह चन्द्राकर ने जन्म दिया था। यानी 'चंदैनीगोंदा' के सर्जक दाऊ रामचंद्र देशमुख थे, तो 'सोनहाबिहान' के दाऊ महासिंह चन्द्राकर। इन्हीं कलापारखियों ने 'कारी' एवं 'लोरिकचंदा' अपनी प्रयोगधर्मिता, महत्ता एवं उपादेयता के साथ छत्तीसगढ़ के लोकमंचीय सांस्कृतिक इतिहास की हालजयी धरोहर बन गईं। 20वीं शताब्दी की प्रसिद्ध लोकमंचीय प्रस्तुतियों का जब भी जिग्र होना उनमें 'कारी' व 'लोरिकचंदा' अपनी अलहदा प्रस्तुतियों के लिए अनिवार्य तौर पर प्रमुखता से जाने जायेंगे।

नाचा को संगठित कर व्यवस्थित रूप प्रदान करने का श्रेय दुलारसिंह साहू मंदराजी को है। इस लोकनाट्य की गरिमा को बनाये रखने में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है, क्योंकि पूर्व में संगठित नाचा पार्टी नहीं थी। उन्होने इस विधा को

संरक्षित करने हेतु अपनी सारी सम्पत्ति लुटा दी उनका यह घर एक कला साधना बरबस भारतेंदु हरिश्चन्द्र की याद दिलाते हैं। इसी प्रकार से रामचन्द्र देशमुख ने परिवर्तनकारी युग में एक कुशल शिल्पी की तरह नाचा को तराशा एवं बहुत बड़ा सहारा दिया। नाचा के नये प्रयोग किय। वास्तव में छत्तीसगढ़ की धूलधूसरित लोक संस्कृति को पुनः महिला मंण्डित करने का सफल और सार्थक भागीदारी निर्वहन की। आज लोकनाट्य की छटा देश विदेश में अपनी अपनी इंद्रधुशी फुहारों से सराबोर कर रही है। रामचन्द्र देशमुख ने पहले ही यह भाव लिखा था कि नाचा को परिष्कृत और परमार्जित करना आवश्यक है इस उद्देश्य से 1951 में छत्तीसगढ़ 'देहाती कला विकास मण्डल' की स्थापना की तथा इसके लिए उन्होने मोती स्वरूप चुन चुन कर कलाकारों को एक मंच पर अपने परिश्रम से एकत्रित किया। रामहृदय तिवारी जी की समर्पित निर्देशकीय क्षमता ने छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य की प्रसिद्धि में निःसंदेह चार चॉद लगाया। कारी एवं लोरिकचंदा जैसी बेहद चर्चित लोकनाट्यों के ऐतिहासिक प्रदर्शनों और उनसे मिली अपार सफलता के बाद तिवारी जी की ख्याति छत्तीसगढ़ भर में फैल गई और वे विख्यात लोकनाट्य निर्देशन के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। तिवारी जी ने लोकनाट्य के संबंध में कहा है कि आदमी जिस अंचल में, जिन परिस्थितियों में जीता है उसकी विभिन्न कलागत अभिव्यक्तियां कभी गले की गुनाहगारों के रूप में, चेहरे की भावभंगिमाओं की शक्ल में तो कभी हाथ पैरों की थिरकन के रूप में कभी मुदृलता कभी कठोरता के साथ कभी उद्गम आवेगों के साथ छलक–छलक उठती है। यही सरल सहज अभिव्यक्ति लोकगीत लोकसंगीत, लोकनृत्य या लोकनाट्य की संज्ञा पाकर कभी उन्मुक्त आकाश के नीचे, जमीन पर कभी खेत खलिहानों में मैदानों तो कभी लोकमंचों या लोक माध्यमों से प्रकट होती रहती है। लोकरंग के संस्थापक, संरक्षक संचालक, लोरिकचंदा में नायक की भूमिका एवं अनेक टेलीफिल्मों में कलाकार एवं निर्देशन की भूमिका निभाने वाले दीपक चंद्राकर ने भी लोकनाट्य के विकास एवं संरक्षण में अपनी अह्म भूमिका का निर्वहन कर रहे है।

हबीब तनबीर ने छत्तीसगढ के लोक कलाकारों के साथ लोक शैलियों के प्रति गहरी समझ और दृष्टि के साथ हिन्दी रंगकर्म को एक नया आयाम दिया। वे

कहते हैं कि यहाँ की प्रतिनिधत्वकारी लोममंचीय कलायें अपनी समग्रता में लोक सांस्कृति रूपों की संवाहक भी है और परिचायक भी। लोक नाट्य जनजीवन के दर्पण होते हैं।

नाचा लोकनाट्य के प्रसिद्ध कलाकार लक्ष्मणदास पनका, लाला फूलचंद श्रीवास्तव, मदन निषाद, ठाकुर सुखसागर सिंह, चुटनूराम कारीगर धनउ देवदास, नोहर दास मानिकपुर, पं. प्रयाग नरायाण तिवारी, पूसू राम यादव, नोहरदास मानिकपुरी, बुधराम देवदास, पंचराम मानकिपुरी, अत्यादि प्रारंभिक कलाकारों` नाम स्मरणीय है।

छत्तीसगढ़ का लोकमंच निःसंदेह अत्यंत समृद्ध रहा है यह छत्तीसगढी लोक जीवन की विस्तृत एवं सहज शसक्त अभिव्यक्ति है इसकी कोई लिपिबद्ध पांडुलिपि खोज करने पर भी सही नहीं मिलती। यही कारण है कि इसका प्रादुर्भाव मानवीय सभ्यता और संस्कृति के साथ ही मानते हैं। अब इसका रूप परिवर्तित हो गया है आयोजन आज बनावटी तत्वों से लिप्त है पूर्व में इसका आयोजन सादगी से पूर्ण था। समय के साथ साथ इस विधा ने परिवर्तन को स्वीकार किया है जनसंचार क्रांति ने भी लोकनाट्य के सामने एक बड़ी चुनौती दी है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में मिलावट और विकास की सीमा रेखा तय करना भी हमारे सामने एक चुनौती है। व्यावसायिकता एवं संचार साधनों के चलते यह तो पिश्चित है कि लोकनसाट्यों में विकृतियों आई है। लेकिन यह भी सच है कि सकारात्मक परिवर्तन के साथ उसके कलात्मक रूप भी सामने आये है। क्षेत्र विशेष ही नहीं देश विदेश में इसकी ख्याति के डंके बज रहे है। जनसमुदाय इस विधा की ओर आकृष्ट हो रहा है। भले ही पुराना स्वरूप लुप्त होते जा रहा है। मौलिक तत्व अंशमात्र है। तब का नाचा कुम्हार के हाथों बड़ी साधना से बना माटी का पवित्र दीपक और आज का नाचा विद्युतीय छटा का चकाचौंध है। छत्तीसगढ़ अंचल एवं सारे विश्व को चकाचौंध करने वाले इस शसक्त माध्यम में आ रही विकृतियों व व्यावसायिकता हेतु जागरूक व ईमानदार कलाकारों को निर्भित समर्पित एवं सूझबूझ के पथ में कदम बढ़ाकर इस अक्षुण्य बनाने की चेष्टा की आशा है।

लोकनाट्य कलाकारों में छत्तीसगढ के 95 प्रतिशत संख्या निम्नजाति के कलाकारों की है। किन्तु उनमें गजब की प्रत्युत्पन्नमति होती है। अपने शोध कार्य के दौरान मैने देखा कि लोक कलाकारों की सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ अच्छी नहीं होती है मात्र कला के पीछे दीवानगी के कारण न तो वे घर के किसी काम के होते हैं और न ही समाज के। अधिकांश छत्तीसगढी कलाकारों को नियमित कार्यक्रम नहीं मिलते। फलतः उनकी कोई भी नियमित आमदानी नहीं होती और वे अर्थाभाव से ग्रस्त होते हैं।

चूंकि ये कलाकार क्षेत्रीय या आंचलिक सांस्कृति जागरण के जीते जागते प्रतीक हैं। ये कलात्मक हलचल के प्रमाण होते हैं अतः इनके प्रति समाज व सरकार को ध्यान देना जरूरी ही नहीं अनिवार्य भी है।

आज छत्तीसगढ ही नहीं वरन् समूचा देश पूंजीवादी उपभोक्ता संस्कृति के शिंकंजों में कसते जा रहा है। यही कारण है कि नगरीय वहंसंख्यक वर्ग लोकसंस्कृति के प्रति उदासीन हो रहा है राष्ट्र जीवन में यह भारी अभिशाप हनन तुल्य है। लोकसंस्कृति की संजीवनी ही हमें इस स्थिति से उबर सकती है। इस लोककला की लोकनाट्य विधा जिसमें हमारी मिट्टी की महक है पर्व परम्पराओं की झलक है और जनजन की आकांक्षओं व लोक कल्याणकारी भावनाएं भी है। इस सांस्कृतिक धरोहर को संकलित संयोजित करने का मेरा यह छोटा सा प्रयास है।

साक्षात्कार एवं फोटोग्राफ भी शोध ग्रंथ को प्रमाणिक एवं सजीव बनाते हैं अतः मैने विभिन्न नाचा पार्टियों एवं लोकरंग के कलाकारों की कला के विभिन्न दृश्य को फोटो के माध्यम से इस शोध ग्रंथ में अंकित किया है। लोक रंग संस्था में उपस्थित होकर कई बार वहाँ के कलाकारों से मुलाकात की है तथा उनके साथ अपना छाया चित्र भी लिया है। जो इस शोध ग्रंथ में संलग्न है।

छत्तीसगढ के लोकनाट्य के शोधकार्य करते हुए मैने यह अनुभव किया कि भतरा नाट्य, लोकनाट्य रहस अत्यंत खर्चीला पेचीदा एवं आडम्बर युक्त होने के कारण आज के परिवेश के बदलती परिस्थिति में पिछले दशक से ही मृतप्राय हो गई है। केवल पुस्तकों, लेखों एवं शोध संग्रह में ही वह सांस ले रही है। पात्रों एवं दर्शकों को इसके प्रति वह उत्साह नहीं है जो पूर्व में था। किन्तु अत्यंत लोकप्रिय

चर्चित एवं कम खर्चीला लोकनाटय नाचा के विघटन की स्थिति मन को झकझोर देने वाली है कि इतनी सहज, चित्ताकर्षक, उद्देश्यपूर्ण, समस्याओं को मंच में सहारे व्यंग्य एवं हास्य के सहारे बड़ी–बड़ी बातों को लोक एवं शासन तक सहजता से पहुँचा देने वाली विधा आज विघटन की ओर जा रही है। दोषी कौन है? यह एक प्रश्नचिन्ह है। नाट्य संचालक, रंगकर्मी, जनसामान्य या प्रशासन?

कुछ पात्र कला प्रदर्शन को एक नशा के रूप में देखते है वे अच्छी प्रस्तुति पूर्ववत स्वाभाविक रूप से दे सकते हैं किन्तु वालीवुड, हालीवुड भौतिकता, भ्रष्टाचार कला के प्रति, जन सामान्य, सरकार एवं संस्था प्रमुख के इमानदार समर्णण का अभाव इत्यादि की दीवारें इसमें बाधक बन रही है। लोकनाट्य नाचा जैसी बहुमूल्य बहुचर्चित एवं लोकप्रिय विधा हम सभी के प्रयास से एवं इसी प्रकार के शोध कार्य से जिवित रहे यह मेंरी शुभकामनायें है।

♦♦♦♦♦